कैनन- बार्ड सिद्धांत
Cannon-Bard Theory

इस सिद्धांत का प्रतिपादन मूलतः वाल्टर कैनन(1927) द्वारा किया गया। बाद में 1934 ई० में उनके शिष्य फिलिप बार्ड ने इस सिद्धांत का समर्थन किया। उपरोक्त दोनों मनोवैज्ञानिक के नाम पर इस सिद्धांत का नाम रखा गया जिसे कैनन- बार्ड सिद्धांत कहते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार संवेग का कारण हाइपोथैलेमस है जिसका स्थान केन्द्रिय तन्त्रिका तंत्र के भाग में प्रमस्तिष्क तथा थैलेमस के नीचे है। संवेग में हाइपोथैलेमस तथा थैलेमस के इस महत्व के कारण ही इस सिद्धांत का नाम हाइपोथैलामिक सिद्धांत या थैलेमिक सिद्धांत भी रखा गया है इसे केन्द्रिय सिद्धांत भी कहा जाता है क्योंकि इसमें केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र का अधिक महत्व होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार संवेग उत्पन्न करने वाले उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रियों या ग्राहक के उत्तेजित होने के बाद उसमें तंत्रिका आवेग उत्पन्न होता है। जो प्रमस्तिष्क में आने के पहले संवेदी तन्त्रिका आवेग थैलेमस तथा हाइपोथैलेमस से होकर गुजरते हैं। इससे हाइपोथैलेमस में अभी-क्रियाएँ पूर्णतः उत्पन्न नहीं होती हैं क्योंकि उसके ऊपर प्रमस्तिष्क वल्क का नियंत्रण होता है जब तंत्रिका आवेग प्रमस्तिष्क वल्क में पहुँच, हाइपोथैलेमस की क्रियाओं पर से वल्क के अवरोध को हटाने के लिये तंत्रिका आवेग भेजता है, तो थैलेमस या हाइपोथैलेमस पूर्ण रूप से क्रियाशील हो जाता है। कैननबार्ड सिद्धांत के अनुसार संवेग में होनेवाली शारीरिक प्रतिक्रियाएँ एवं अनुभव किया गया संवेग दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं और दोनों की उत्पत्ति एक साथ होती है। इस सिद्धांत द्वारा संवेग उत्पन्न होने के निम्न प्रक्रिया है:-

(i) संवेग उत्पन्न होने के लिए किसी उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रिय को उत्तेजित होना अनिवार्य है।
(ii) ज्ञानेन्द्रिय से तंत्रिका आवेग हाइपोथैलमस (या थैलमस) होता हुआ प्रमस्तिष्क वल्क में पहुँचता है।
(iii) प्रमस्तिष्क वल्क हाइपोथैलमस पर से अपना नियंत्रण कम कर देता है तथा कुछ विशेष परिस्थिति में ऐसे तंत्रिका आवेग को भी हाइपोथैलमस में भेजता है जिसकी उत्पत्ति विकल्प में ही हुई होती है।
(iv) हाइपोथैलेमस के क्रियाशील होने पर तंत्रिका आवेग दो दिशा में यानी ऊपर की दिशा में अर्थात प्रमस्तिष्क वल्क की ओर तथा नीचे की दिशा में अर्थात अन्तरांग तथा बाह्य शारीरिक अंगों की माँसपेशियों की ओर एक साथ जाते हैं। तंत्रिका आवेग को वल्क में पहुँचने पर संवेगात्मक व्यवहार या शारीरिक परिवर्तन होता है।
इस सिद्धांत की आलोचना इस प्रकार है -
(i) कैनन-बार्ड सिद्धांत के अनुसार संवेग का स्थान सिर्फ हाइपोथैलेमस है परंतु सच्चाई यह है कि संवेग की उत्पत्ति में हाइपोथैलेमस का महत्व अस्पष्ट है। मासरमैन ने अपने प्रयोग से साबित कर दिया है कि हाइपोथैलेमस तथा थैलेमस के उत्तेजित करने से जो संवेग उत्पन्न होता है, वह अस्पष्ट, विकीर्ण, यांत्रिक तथा सांवेगिक रूप से अर्थहीन होता है।
प्रेयर तथा ब्रोडी ने प्रयोग में बताया कि मस्तिष्क के अन्य भाग जैसे लिम्बिका तंत्र ऐमिगडाला तथा टेम्परल क्षेत्र आदि को उत्तेजित करने पर व्यक्ति में संवेग होते पाया गया है और इन हिस्सों को घायल कर देने से संवेग में कमी आ जाती है। फिर भी ये सिद्धांत आज भी मान्य है।